॥ श्रीः ॥

अटल सिद्धांत

डरते रहो ये जिंदगी बेकार न हो जाय ।
ईश्वर स्वधर्म सत्य का अपकार न हो जाय ॥ टेक ॥
पाया है तन अमोल सदाचार के लिये ।
विषयों में फँस के तुमसे अनाचार न हो जाय ॥ डरते रहो०
रक्षा करो सब जीव की शुभ कर्म हरि भजन ।
इतना भी करके पीछे अहंकार न हो जाय ॥ डरते रहो०
मंजिल असल मुकाम की तै करना है इसे ।
जग ठग नगर में फँसके गिरफ्तार न हो जाय ॥ डरते रहो०
माधव लगी है बाजी माया मोह जाल से ।
धोखे में पड़ के अबकी कहीं हार न हो जाय ॥ डरते रहो०

लेखक तथा प्रकाशक—
पं० माधवराम अवस्थी "व्यास"
(स० विद्वन्मंडल वर्णाश्रम स्वराज्य-संघ)
बहरोड़िया मोहाल, चौक, कानपुर ।

प्रथमबार २०,००० प्रति | सन् १९३० | मूल्य -)

प्रिंटर—लाला रामनारायण, मरचेंट प्रेस, कानपुर ।

भूमिका तथा सूचना।

ईश्वर की सृष्टि प्रकृति से बनाई गई है। उस प्रकृति में सत्व, रज, तम तीनों गुणों का मेल है। सब व्यक्तियों में ये तीनों गुण होते हैं परंतु सत्वगुण की अधिकता से देवसृष्टि, रजोगुण की अधिकता से मनुष्यसृष्टि और तमोगुण की अधिकता से आसुरीसृष्टि होती है। अंशांश से मनुष्य योनि में भी अधिक सत्वगुण होने से धर्मात्मा सत्यवादी तथा रजोगुण तमोगुण अधिक होने से नास्तिक अधर्मी हठी अधर्म ही को धर्म कहनेवाले मनुष्य होते हैं—जनता इसका लक्ष्य करके देख ले।

प्यारे हिन्दू भाइयों से नम्र निवेदन है कि हम एक सामान्य व्यक्ति हैं। त्यागावस्था में स्थित, कालक्षेप कर रहे हैं। परंतु आज धर्म पर ऐसी दुर्घटना देख, ईश्वरी तथा कुछ सज्जनों की प्रेरणा से फिर भी न स्वस्थ रह सके। नीति अब तक धर्म का पालन करते हुए न्याय किया करती थी किन्तु अब तो वह उद्दंड हो धर्म का नाश कर अपना प्रभाव प्रजा पर डाल रही है। इससे ईश्वररूप रक्षक राजा तथा ऋषिवंशज सनातनी भाइयों से प्रार्थना करके उनसे हर तरह से धर्मरक्षार्थ अपील करने के लिए लेखनी हाथ में आई है। हम प्राचीन लेखक सीधा २ लेख लिख कर आप के सामने रखते हैं आशा है कि निष्पक्ष सच्चे भाव को पढ़ कर अगर सचाई के साथ दिल में हाथ धर ईश्वर से पूछेंगे तो वह परमात्मा आपके हृदय में ठीक २ उत्तर देगा, मानना और न मानना आपका काम है।

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀ श्रीनृसिंहो विजयते ❀

श्लोक—धर्मकर्तृँस्तथा धर्मं रक्षितारं भजाम्यहम् ।
दैत्याधिराजहन्तारं तं नृसिंहं भजाम्यहम् ॥१
रावणं भयदातारं हन्तारं सर्व रक्षसाम् ।
सुभक्ताभयकर्तारं हनूमन्तं स्मराम्यहम् ॥२॥

दोहा—धर्मधर्म कर्तार के, रक्षक भय हरतार ।
बंदौं सो नरसिंह मैं, दैत्यराजहंतार ॥ १ ॥
रावण के भयदायक, राक्षस मारनहार ।
भक्त अभयकारक हिये, सुमिरौं पवनकुमार २

सुधारपंथियों का प्रबल आक्षेप ।

इन सब पोंगापंथियों, कूड़ापंथियों ने भारत को चौपट कर दिया । ये दकियानूस माल मार २ कर धर्म के ढकोसले में सब को जकड़े रहते हैं । ये कूपमंडूक, कमअक्ल, बुज़दिल उन्नति में रोड़े अटकाते हैं । ये 'पोप' गड़रियों के गीतों को वेद, अपने पुरुषों की मनमानी लिखी किताबों को धर्मशास्त्र और गप्पाष्टकों को पुराण कहते हैं । कुछ भी हो हम एक न मानैंगे, सबको कुचल भारत को स्वतंत्रता के शिखर पर ले जांयगे । अब तो युक्ति से सरकार भी मुट्ठी में आ गई है, ये सब निकम्मे चिल्ल पों मचाया करैं, पानी पी पी कर कोसैं, शिर पीटैं, क्या परवाह है, बाजी मार ली है ।

आक्षेपों का प्रत्युत्तर।

भारत सरकार, भारतवासी जनता तथा अन्य विदेशी राज्यों को भी भली भांति मालूम है कि भारतवासियों में धर्म ही प्रधान है, धर्म भारत का प्राण है यदि ऐसा कहैं तौ भी अत्युक्ति न होगी। उसमें ब्राह्मण जाति तो धर्म की ठेकेदार प्रसिद्ध ही है। इसकी सत्यता, ब्राह्मणों का हक़ और उदारता, दयालुता, त्याग आदि का कुछ परिचय आप सब के संमुख आता है देखिये। इस वक्त पर जैसे देह के चार हिस्से शिर हाथ कमर पैर चारो आपस में झगड़ने लगे पीछे हाथ कमर पैर तीनों मिलके मुंह को निकम्मा बक्की मुफ्तख़ोर कह चले मारो २ दूर करो। तब मुँह ने सोचा इनसे कैसे पार मिलै यह सोच चुप हो गया। भूख लगने पर तीनों भोजन खिलाने लगे। मुँह बोला तुम तीनों खा लो। दो तीन दिन में सब ढीले हो गये। जब मुँह को मनाय भोजन खिलाया तब सब ठीक भये। बस, वेद में—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राज्यन्यः कृतः।
ऊरूतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यांशूद्रो अजायत॥

ईश्वर के मुख से ब्राह्मण, हाथ से क्षत्री, कमर से वैश्य और पैर से शूद्र हुए। आपस में झगड़ तीनों एक पर जुट गये—अब ब्राह्मण जाति चेत करै अपनी असलियत पूर्वजों का रहस्य पढ़ै, इसका मुख्य क्या काम है सोचै जागै तो सब ठीक हो जाय।

ब्राह्मणों का हक़ और उदारता।

सज्जनो, क्षत्री वैश्य शूद्र सब भाइयों के मनुजी क्षत्री राजा थे, उनकी बनाई मनुस्मृति में लिखा है—

ईश्वर के मुँह, हाथ, कमर, पैर से क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र चारों वर्ण बने हैं तो ब्राह्मण बड़ा हुआ, इसका हक़ सब पर पूरा है और तीनों भाई क्षत्री, वैश्य, शूद्र सिर्फ जीविका के अधिकारी हैं। मनुका कहना है कि 'सर्वस्वं ब्राह्मणस्येदं'। जो कुछ ऐश्वर्य है वह सब ब्राह्मणों का है, ब्राह्मणों की ही दया से सब क्षत्री आदिक सुख भोगते हैं।

देखिये, ब्राह्मण जाति ने संसार का सर्वाधिकार पाने पर भी अपने तप और भजन में बाधा देख कर अपने छोटे भाई क्षत्री को राज्याधिकार, वैश्य को धनाधिकार और शूद्र को सेवाधिकार सौंप दिया और स्वयं आप सिर्फ उन सबके दिये टुकड़ों पर रह कर तप करने लगे। दान भोजन इसलिये स्वीकार किया कि ये तीनों भाई तप नहीं कर सकते इससे व्यवहार में जो पापादि हो गया हो उसकी शांति हो जाय "योयस्य भुंजते चान्नं तस्य पापं न संशयः" जो जिसका अन्न खाता है वह उसका पाप खाता है इत्यादि पराधीन हो अनेक कष्ट सह विद्या तपमें लगे रहे तिसपर यह दुर्घटना कि एहसान भूल कर उपरोक्त आक्षेप किया जाता है! अगर कहिये अब ब्राह्मणों में यह बातें नहीं हैं तो सज्जनों तीनों

भाइयों ने सहायता छोड़ दी इससे मूर्ख हो पेट के मारे सब कुछ करने लगे इसकी जिम्मेदारी आप सब पर है तौभी सेवा में आगे हैं जैसे पानी-पांडे आदि। तुम्हारा किसी से बैर हो तौ भी ब्राह्मण आगे "बुलाओ गंगापुत्र"। क्या आप नहीं समझते कि पैदाइशी सिजरे से हक ब्राह्मणों का है जैसे महाराजा एडवर्ड के चि० पुत्र जार्ज पंचम एम्परर और सब ड्यूक हैं।

आक्षेप का द्वि० प्रत्युत्तर।

महाभारत पढ़िये। कृतवीर्यादि राजा लोभवश होकर ब्राह्मणों को मार २ धन छीनने लगे। यहां तक कि कंदराओं में छिपी हुई ब्राह्मणों की स्त्रियों को खींच कर उनके गर्भ नष्ट कर दिये। सहस्रार्जुन राजा यमदग्नि मुनि की सबला गौ को छीन लाया। यमदग्नि-पुत्र परशुराम जी राजा के पास गये, गऊ मांगी, इकला समझ राजा ने फटकार दिया। तब प्रतापी परशुराम जी ने इकले ही सेनसहित राजा को मारा, पुत्र भग गये, गऊ लाकर पिता को दी। सहस्रार्जुन के पुत्रों ने अपने बाप का बदला लेने को परशुरामजी के पिता यमदग्नि का शिर जो ध्यान में थे काट लिया। परशुराम की माता २१ वार छाती पीट कर रोई इस कारण परशुरामजी ने आकर यह दशा देख २१ वार क्षत्रीकुल नाश की प्रतिज्ञा कर भूपों का नाश किया और सब पृथ्वी अपने भाई ब्राह्मणों को दी। भुजबल भूमि भूप बिनु कीनी। विपुल वार महिदेवन दीनी॥ देखिए, मौरूसीपन से सब राज्य ब्राह्मण का है। उधर यह

दयालुता-इधर यह आक्षेप! रामायण वाल्मीकि पढ़िये—रामजी तथा अन्य भूपों ने यज्ञ कराने की दक्षिणा में सब राज्य ब्राह्मणों को दे डाला, ब्राह्मणों ने राज करने से तप नष्ट देख, राज्य के बदले गौवों को लिया और गोचारण भूमि छोड़वाई। देखो बनजर जंगल सब में गौवों का हक है इसको तोड़ कर खेत बनाना महा पाप है। लीजिये वफ़तन भी सब ब्राह्मण का है। सज्जनो, क्या इस पर ध्यान न दोगे। और भी बड़े कष्ट सह कर ब्राह्मणों ने वेद शास्त्र अपने दिल में कंठ कर छिपाये, पीछे लिखे, जिससे आप अपने को क्षत्री वैश्य शूद्र कहते हैं, नहीं तो पता भी न लगता कि आप कौन थे। इस स्वराज्य आंदोलन में ब्राह्मणही अधिक हैं जांचलो फिर क्यों तानेबाजी।

आर्य-अनार्य निर्णय। मनु अ० १०

वर्णापेतमविज्ञातं नरं कलुषयोनिजम्।
आर्यरूपमिवानार्य्यं कर्मभिः स्वैर्विभावयेत्॥ ५७॥
अनार्यता निष्ठुरता क्रूरता निष्क्रयात्मता।
पुरुषं व्यजयंतीह नरं कलुपयोनिजम्॥ ५८॥

यह कथन मनुजी का है। शुद्ध वर्ण से हीन दूषित योनि (दूसरे बाप से उत्पन्न) वर्णसंकर अपने को आर्य कहनेवाला मनुष्य अनार्य है उसकी पहिचान उसके कर्मों से होती है॥ ५७॥ जिसमें अनार्यपन (विना मतलब बैर मत्सर करना) निष्ठुरपन (मतलबी) क्रूरपन (लोभहिंसामय) निष्क्रियपन (अपने वर्ण का ठीक २ धर्म न करके मनमाने उलटे कर्म

करना) इन सब कर्मों से कलुष योनिज (वर्णसंकर) अनार्यरूप आर्य है ॥ ५८ ॥ इसकी ठीक जांच जनता करले।

भारत की उन्नति या ह्रास।

सुधारपंथियों का यह कथन है कि हमने भारत को विधर्मियों से बचा कर उन्नति के शिखर पर पहुँचाया—यों सही, जैसे किसी शिकारी ने एक बकरी भेड़ियों से बचा ली पीछे कुछ दिन में चेलों सहित शिकारी बकरी को मार कर उसकी खाल में भूसा भर ज्यों की त्यों बकरी दिखलाने पर उद्यत हुआ। बकरी ने कहा आपने पहले क्यों उनसे बचाया? सब ने उत्तर दिया अपने मतलब को ऐसा ही किया जाता है। ठीक बकरी रूप भारतवर्ष की यही दशा है।

बेईमानी की तरक्की कब से?

कुछ समय पहिले अदालत और पंचायतों में कर्जदार गंगा उठाने और महादेव पर हाथ धरने का नाम लेते ही कर्जा मान लेता था परन्तु इधर लगभग पचास साठ वर्षों से सुधारपंथ प्रचार कर चला कि गंगा पानी है, मूर्ति पत्थर है, इत्यादि। इसके असर ने रजिस्टर्ड कर्जे पर जवाबदावा लगवाया। चार २ आने में झूंठे गवाह गंगा उठाने को तैयार हैं। हाकिम वकील दोनों हैरान हैं कि फैसला करें तो क्या करें। जनता सोचै यह सुधार हुआ कि ह्रास।

खेती में कम उपज क्यों?

जब से यह प्रचार हुआ कि धर्म ढकोसला है तब से सब

स्वार्थ में झुक गये। जिससे लोक परलोक दोनों बनैं "या लक्ष्मी धेनुरूपेण" लक्ष्मीरूप गऊ है ऐसे परमधर्म गोरक्षा को सब छोड़ बैठे, गौवों का मौरूसी हक़ बनजर जंगल की जमीन तोड़कर खेत बनाये, यहां तक कि नदी तालाब भी न बचने पाये। किसी ने गौवों पर कर बांधा, किसी ने जंगल में चरना रोक दिया। जीविका बगैर कौन जी सकता है बेचारी चारा बगैर बेमौत मरीं। जमीन बढ़गई, खाद (पांस) दवा को भी नहीं रही, लीजिये बोने से बीजा भर पैदा होना कठिन होगया। (दूसरे) बृक्ष लगाना बड़ा धर्म है "अश्वत्थमेकं पिचुमंदमेकं" जो एक बृक्ष पीपल आदि का लगा दे उत्तम गति हो परंतु इस पंथ के प्रचार से धर्म से सब हटगये। टकों के लालच से हरे २ आमों के बाग़ जंगल बेच डाले, सफ़ाई हुई। फल क्या हुआ जहां बृक्ष कम हो जाते हैं बृष्टि कम होती है जैसे मारवाड़ में बृक्ष न होने से वर्षा की कमी है वहां पानी अन्न से महँगा है आप भी जांच करलो।

दूध घी क्यों नाश हुआ ?

मित्रो ! हज़ारों मन मांस और चमड़ा सुखा कर विदेश जाता है और बदले में नकली घी आता है। शहरों का हज़ारों मन मैला गंगा में जाता है, नलका शुद्ध जल पीना भी कठिन हुआ। किन्तु शोक ! सुधारपंथ की दयादृष्टि इधर कभी भी न हुई ! स्त्रियां गृहस्थी में गृहस्थ उपकुर्वाणक ब्रह्मचारी होने से उसकी अर्द्धाङ्गी स्त्री ब्रह्मचारी का अंग पूरा हो

इससे जूता नहीं पहरतीं और बाल रखती थीं। गृहस्थी में रूखे बाल रखना मना है "राक्षतामूर्धजानां" इससे तेल डालती थीं। पुरुष को मिहनत दौड़ धूप ज्यादा होने से जूता बगैर निर्वाह न होगा इससे आज्ञा हैं। विधवा स्त्री तो सन्यासी के समान है वहां जूता कहां। परंतु अब तो इस प्रचार ने ऐसा जोर मारा कि लेडीफेशन ने जूतों की भरमार कर दी। बेग बंधन कमरबन्द लांगबूट पैर से शिरतक चमड़ा ही छा दिया। बैठे बिठाये जबरदस्त गोहत्या स्त्री जाति पर लादी गई। प्रथम एक जोड़ी बिछुआ से श्रृङ्गार और जन्म पार, अब साल में कई मुलायम जोड़े चाहिये। मुलायम जोड़े जीते जी छोटे बच्चे को बेतों से मार २ उनका खून खाल में जज्ब कर खाल निकालने से बनते हैं, लो सौभाग्य समाप्त हुआ। अगर कहो हम फलहारी लेते हैं तो उसमें भी तो दूसरे ही का भला करते हो। पहले से पचास गुना पशु कम होगये घी दूध कहां से आये। आगे जब पशु बृद्धि थी उस समम सं० १६७२ में १६ सेर का और इससे ४०० वर्ष पहले २४ सेर का घी बिकता था यह स्वप्न हुआ। इसका फैसला जनता करले।

बीमारी की बृद्धि क्यों?

इस पंथ का एलान है कि छुआछूत कुछ नहीं, खान पान से धर्म नहीं जाता। बस घर का तो शुद्ध भोजन लोप हुआ, बाज़ारों में बिकता होटलों में पका हुआ गपागप उड़ने लगा। ज़रा इधर भी देखलो "आलापाद्गात्र संस्पर्शाच्छयना-

श्रयभोजनात् । संचरंति ध्रुवं पापास्तैलविंदुरिवांभसि ” ॥ पापी से बात करने, छूने, संग बैठने, सोने, भोजन करने से पानी में तेलविंदु जैसे छा जाता है ऐसे ही उसके पाप संगी पर छा जाते हैं । “ न जाने गुप्त पातकम् ” देखने में रूप तो उजागर है पर गुप्त पाप तो किसी के किसी को नहीं मालूम होते हैं । इतनाही नहीं—जैसा खाय अन्न, तैसा बनै मन । गटपट अन्न से सटपट मन हो गया, मन बिगाड़ से घरवाले बाहर हवा खाने लगे, घर नौकरों पर छोड़ दिया ! क्यों न रोग बढ़े । दवाखाना घर २ हो जांय पर रोग नस २ में समा जायगा । सबकी सूरतों को देखो पीले २ पाल के आम हो रहे हैं । पुरानी चालवाले स्त्री पुरुषों को देखो, क्या अंगूरी रंग, जन्म भर सुख भोगैं बाल बांका नहीं । यह क्यों ? शुद्ध भोजन, घर का सँभाल । निर्णय करो ।

विधवा-बृद्धि क्यों हुई ?

जब से सुधारपंथ की डुग्गी पिटी कि विधवा ब्याह वेद में लिखा है । मरी लाश पर रोती हुई स्त्री को कोई यह कहके समझावै कि तेरे पति का धन पुत्रादि है संतोष करो, तहां यह अर्थ करना कि उठ मत रोवै ये सब पुरुष खड़े हैं तू एक को अपना पति करले, इत्यादि । और लो, स्त्री लड़का पैदा करने की मशीन है, कोई चलावै । ज़रा विधवासपोर्ट हिस्ट्री पढ़िये—स्त्री के ११ पति हो सकते हैं, कन्या मनमानी कर सकती हैं, पुरुषों को भी कोई पाप नहीं है । फिर क्या धड़ाधड़ विधवा

आश्रम खुले, कार्यवाही होने लगी, पाप की हद होगई, फिर भी विधवायें क्यों न बढ़ैं। ५० वर्ष पहले की विधवा संख्या देखो और अब की पढ़ो बड़ा अंतर पड़ैगा—विधवा उम्र से नहीं बुरे कर्मों से होती है। आगे पढ़िये फैसला हो जायगा।

हरदम अकाल क्यों ?

मनुस्मृति—अग्नौप्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठति।
आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः॥

अग्नि में हवन की विधि से छोड़ी गई आहुति सूर्य में जाती है उससे वृष्टि होती है, वृष्टि से अन्न होता है, अन्न से प्रजा होती है।

इधर हवन से वायु शुद्ध होती है यह पाठ उठा। साथही शुद्ध घृत तिलादि छोड़, वालछर छरीला कोरी डाली में भर जहां तहां बैठ होली में गाली की भांति मिस्टर धर्मपाल जोड़ी पर सवार सिगार दबाये बक २ झोकने लगे। फल क्या हुआ 'प्रतिबध्नातिहिश्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः'। पूज्य की पूजा में उलट पलट होने से भला होने के बदले बुरा हो जाता है जैसे दवा को बेकायदे खाने से नुकसान करती है—ऐसे 'अतिवृष्टि-रनावृष्टिर्मूषकाः सलभाः शुकाः। हुआ क्या ? कहीं बहुत वर्षा से नदी बढ़ी गांव वह गये, कहीं अनावृष्टि से जमीन नहीं बोई गई जैसे यमुनापार में अबकी साल हुआ, कहीं टीड़ी से सफट स्वाहा—अबकी साल टीड़ी से बहुत नुकसान हुआ है।

सुधारपंथ ने देशी कार उड़ाये। सब काम अंजन से हों यहां तक कि रोटी भी अंजनी चूल्हे से पके। लीजिये, गरीब अछूत मरे। अब यह कह कर कि तुम्हारा उद्धार करते हैं सँग बैठो तो क्या हो गया बिना दूध बालक का रखना है। हवन की चिकनी आहुति से बृष्टि होती है, इंजनों के सूखे धुओं से बृष्टि सूख जाती हैं, बृष्टि व्यतिक्रम से अन्न कम होता है इससे अकाल ही सा रहता है, फैसला करना आपके हाथ में है।

राजा प्रजा में उलझन क्यों ? मनु० अ० १०

यत्र त्वेते परिध्वंसा जायन्ते वर्णसंकराः।
राष्ट्रिकैः सहतद्राष्ट्रं क्षिप्रमेव विनश्यति ॥ ६१ ॥

मनुजी कहते हैं—जहां ऐसे वर्णसंकरकारक परिध्वंस उपद्रव शुरू हों वहां राजा और प्रजा भिड़ कर दोनों जल्दी ही बिगड़ जांय। यह सब आंखों देखलो आगे क्या होगा यह ईश्वर जाने। ईश्वर से प्रार्थना करो इसी से राजा और प्रजा दोनों का भला होगा।

भजन—उबारो हमको दीनदयाल ॥ टेक ॥

उमड़ा सिंधु अधर्म जबर है, कोई नहीं रखवाल ॥उ०॥
ये मल्लाह सुधारपंथ है, भयो अधिक मतवाल।
धर्म जहाज सवार सनातन, डूबत विकल बिहाल ॥उ०॥
नीतिपाल बल्ली कर पकड़े, चलैं स्वार्थ की चाल।
माधोराम श्याम प्रभु हमरो, शीघ्र करो प्रतिपाल ॥उ०॥

सनातनी प्रजा ।

सबको अच्छी तरह मालूम है कि भारत में सनातनी प्रजा राजा को ईश्वर मानती है "अष्टाभिश्च सुरेन्द्राणां मात्राभिर्जायतेनृपः" । इतना ही नहीं उसका वर्ताव भी वैसा ही करती है । सरकार की भी न्याय और धर्मरक्षा में भारतवासियों पर इतनी उदारता है कि वंगवासी ४।१३। ३० में लिखा है कि सन् १७८० की १८ वीं धारा और सन् १७९७ की १२ वीं धारा सन् १९१५ में भारतशासन कानून में ज्यों की त्यों लिखी गई हैं उनका मतलब यह है कि भारतवासी हिन्दू अथवा मुसलमान के पारिवारिक स्वार्थ तथा धर्मरक्षा के लिये पिता अथवा घर के मालिक का स्वत्व और अधिकार संपूर्णता से परिरक्षित रहेगा एवं जाति तथा धर्म संबंधी कोई भी कार्य इंगलैंड के कार्य के अनुसार गैर कानूनी अपराध होने पर भी वह अपराध नहीं समझा जायगा । "सन् १७९७ की १२ वीं धारा"–हिंदू अथवा मुसलमान के पारिवारिक स्वार्थ तथा धर्मरक्षा के लिये पिता व घर के मालिक का स्वत्व और अधिकार अदालत मान्य करेगी । श्रीविक्टोरिया महारानीजी का कथन–किसी के धर्मभाव में कोई वाधा न करें । सन् १९१५ में भारतशासन में ये दोनों कानून ज्यों के त्यों रक्खे गये और सन् १९१६ में यह वात भाषा में स्पष्ट लिपिवद्ध है कि पारलियामेंट के किसी कानून के विरुद्ध यदि कोई भारतीय व्यवस्थापक सभा कोई कानून प्रणयन करेगी तो वह कानून नाजायज़ समझा जायगा–

जहां ऐसी प्रजापालक सरकार है और सनातनधर्मी वेद स्मृति इतिहास पुराण के मानने वाली प्रजा जो धर्म ही को प्राण समझती है और राजा को ईश्वर मानती है वहां पर इस सुधारपंथ ने सरकार को भुलावा दे उलटा समझा कर धर्म को कानून से जकड़ दिया। साथही अनेक बिल उपस्थित कर दिये और धोखा दे सुधारपंथ ही के लोग सनातनी भी बन कर स्वीकृति देने लगे। इससे प्राचीन सनातनी प्रजा को बड़ा कष्ट है इस पर सरकार ज़रूर ध्यान देगी और अपनी पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार धर्म को कानून से वरी करैगी। सनातनी प्रजा को चाहिये कि तार और रजिस्टरी द्वारा सरकार से अपील करै, सुनाई अवश्य होगी।

वेद से कन्या के विवाह का समय निर्णय।

सज्जनो! कन्या का विवाह समय सदैव से निर्णीत चला आ रहा है और उस पर जनता चलती भी है। किसी २ ने बहुत शीघ्रता की इस पर सुधारपंथ ने अङ्ग रक्षा के लिये शिरही गायब कर दिया। यह रक्षा हुई कि प्राणहरण? ठीक, इस बिल ने कम उम्र में विवाह रोकने में धर्म का शिर ही उड़ा दिया, इस पर इधर उधर से मंत्र श्लोक पढ़ खींच तान कर अर्थ का अनर्थ करके जनता को भ्रम में डाल दिया। इस कारण दोनों पक्ष की साफ २ बातें निष्पक्ष होकर लिखी जाती हैं आप सब इन्साफ कर लीजिये।

प्रश्न–ऋग्वेद अष्टक ३ अध्याय ३ वर्ग २१ मंत्र १६ "आधेनवोधुनयंता०" इस मंत्र में बड़ी कन्या का विवाह आता है।

उत्तर–सज्जनो, विवाह का निर्णय विवाह प्रकरण के मंत्रों से होता है, यह मंत्र विवाह प्रकरण का नहीं है यज्ञ प्रकरण का है, यज्ञ में स्त्री पुरुष यज्ञ करते हैं वहां पर युवती आदि पद आ गये तो इससे क्या हुआ।

प्रश्न–ऋग्वेद अष्टक २ अ. ७ वर्ग २२ मंत्र २४–"तमस्मेरा युवतयो०" यहां युवतयो पद से बड़ी लड़की आती है।

उत्तर–प्यारे भाइयो, यह मंत्र भी विवाह प्रकरण का नहीं है इसमें अपानपात देवता से धनकी प्रार्थना की गई है, इसका युवती विवाह प्रतिपादक अर्थ करना बड़ी भूल है।

प्रश्न–ऋग्वेद अष्टक ८ अध्याय ३ वर्ग २१ मंत्र ४–"सोमो वधूयुरभवत्०"। ऋग्वेद अ० ८ अ० ३ वर्ग २७ मंत्र ३ "तुभ्यमग्रे०"। ऋग्वेद अ० ८ अ० ३ वर्ग २८ मंत्र १–३ "सोमोददद्गंधर्वाय०, उदीर्ष्वातो०" इत्यादि ये सब मंत्र विवाह प्रकरण के हैं इनमें अग्नि को वरके लिये कन्या का देना कहा है और अग्नि का समय रजोधर्म तक है। लीजिए अब तो रजोधर्म के बाद ब्याह साबित हो गया, बड़ी कन्या आ गई।

उत्तर–वाह २ धन्यवाद, ये विवाह मंत्र तो पेश किये और बाल की खाल निकाल खींच तान कर अग्नि के

समय से रजोधर्म भी दिखलाया, पर आपने यह भी विचार किया कि अग्नि देवता के भोग समाप्त का समय रजोधर्म होनेवाला भावी समय बतलाता है न कि रजोधर्म के बाद विवाह पाया जाता है अगर हठ से भावी अर्थ न मानोगे तो इन मंत्रों में "प्रजयासह" "रयिंच पुत्राँश्च" ऐसे पद भी आये हैं जिनका अर्थ यह होता है कि यह कन्या पुत्र सहित धन और पुत्रों को भी अग्नि देव मुझे देते हैं तो क्या गर्भवती या पुत्रवाली या पुत्रोंवाली कन्या अग्नि देते हैं यह अर्थ तो बाल की खाल बगैर खुलासा ही निकलता है इससे अग्नि का देना रजोधर्म के पहले ही है। रजोधर्म और पुत्र होना यह भावी अर्थ मानना पड़ेगा आपका अर्थ तो साधारण पुरुष भी न मानैगा। अगर अब भी शंका न गई हो तो खुलासा आप ऋग्वेद ही का प्रमाण लीजिये।

ऋग्वेद मंडल १ अ. १८ सूक्त १२६ मंत्र ७—

उपोपमे परामृष मामे उभ्रणिमन्यथा ।
सर्वाहमस्मि रोमशा गान्धारीणामिवाविका ॥

इस मंत्र में रोमशा कन्या कहती है कि मैं गांधारी विवाह योग्य हूं—गांधारी पद का अर्थ देवल ऋषि कहते हैं—

ऊर्ध्वं दशाब्दाद्याकन्या प्राग्रजो दर्शनाद्यदा ।
गान्धारी स्यात्समुद्वाह्या चिरंजीवितुमिच्छता ॥

दश वर्ष के बाद रजोधर्म के पहले कन्या की गान्धारी संज्ञा है जो चिरंजीव होना चाहता है ऐसी कन्या से विवाह करै—गर्भाधान संस्कार का प्रकरण इसमें मत मिलाइये।

प्रश्न—ऋग्वेद अ० ८ अ० ८ वर्ग २७ मंत्र १—"उदसौ सूर्या" इस मंत्र में वला पद है इससे वड़ी कन्या आती है।

उत्तर—इस मंत्र में वला शब्द का बड़ी कन्या अर्थ करना बड़ी भूल है वहां विद्वला पद है जिसका अर्थ "ज्ञातवती" जानती भई है। लो, गया आप का अर्थ।

प्रश्न—ऋग्वेद अ० ७ अध्याय ८ वर्ग २० मंत्र ७—"न तस्य विद्म०" इस मंत्र में युवती पद आया है इससे वड़ी कन्या साबित हुई।

उत्तर—सज्जनो, आप पढ़े लिखे हो देखो और विचारो यह मंत्र भी बिवाह प्रकरण का नहीं है यहां यज्ञ में अश्विनी-कुमार की प्रार्थना है। यज्ञ तो स्त्री पुरुष ही करते हैं युवती पद आने से क्या बिवाह सम्बन्ध आगया समझ कर बात कीजिये हठ मत कीजिये।

प्रश्न—अथर्ववेद कांड १४ अनुवाक् १ सूक्त १ मंत्र १३ 'माहिंसिष्टं कुमार्यं०' इस मंत्र में कन्या का बड़ापन साबित है।

उत्तर—मित्रो, यह भी मंत्र विवाह प्रकरण का नहीं है इसमें तो साफ़ कुमार्यं लिखा है युवती पद भी नहीं है फिर क्यों उछलते हो ? आप ख्याल करके और भी पढ़िये—

अथर्व कांड १४ अनु २ सू० २ मंत्र २२–

यं वल्वजं न्यस्यथ चर्मचोपस्तृणीथन ।

तदा रोहतु सुप्रजाया कन्या विन्दते पतिम् ॥

देखो इस मंत्र में कन्या पद है "दशवर्षाभवेत्कन्या ह्यत ऊर्ध्वं रजस्वला" कन्या दशवर्षवाली लड़की है उसके बाद रजस्वला के समय से रजस्वला कही जायगी–अगर कन्या पद से ही रजोवती लड़की मानोगे तो सुप्रजा पद भी इस मंत्र में है, क्या लड़केवाली भी वर्तमान ही समय में अर्थ करोगे इससे कन्या पद रजोधर्म से पहले को बतलाता है–यों तो साधारण रीति से लड़की बुड्ढी होने पर भी मा बाप के घर में कन्या ही कही जाती है कि अमुक की कन्या है ।

और भी सुनिये-अथर्व. कां. १४ अनु. २ सू. १ मंत्र २३- "पूर्वापरं चरतौ माययेतौ शिशू०" इस मंत्र में कन्या वर के लिये शिशू दोवचन वाला पद आया है तो कन्या बर शास्त्र संमत उमरवाले न कहकर क्या शिशू पद से दूध पीनेवाले कहोगे ? इससे रजोधर्म के पूर्व ही वेद में कन्या के विवाह की आज्ञा है ।

प्रश्न–अथर्ववेद कांड ११ अनु० ३ सू० ७ मंत्र १४— "ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विंदते पतिम्" । इस मंत्र में तो कन्या का ब्रह्मचर्य कहते हैं अब तो ज्यादा उमर आगई रजोधर्म की बात रही इसको तो मानोहीगे ।

उत्तर–मित्रो, इस मंत्र और भाष्य को पढ़ो इस में ब्रह्मचर्य पद आया है उसका यही अर्थ है कि कन्या के हृदय में

संसारी गृहस्थाश्रम वाले पतिमिलन आदि के उत्कृष्ट भाव न प्रगट भये हों तभी पति को प्राप्त हो जाय। यहां न तो वड़ी उम्र का जिकर है और न गुरुकुल वास का वर्णन है। अगर ब्रह्मचर्य पद से बड़ी उम्र तथा गुरुकुल वास ही सावित करोगे तो इसी मंत्र में बैल का भी ब्रह्मचर्य है उसको किस गुरुकुल में भेजोगे इसलिये इस मंत्र में केवल ब्रह्मचर्य की प्रशंसा है अगर समझ में न आवै तो इसी मंत्र के आगे और भी कई मंत्र हैं जिनमें पशु पक्षी औषधी का भी ब्रह्मचर्य कहा है वहां क्या करोगे ?

अथर्ववेद कांड ११ अनु० ३ सू० ७ मंत्र २०-२२—

ओषधयो भूतभव्यमहोरात्रे २० पार्थिवा दिव्या पशव आरण्या ग्राम्याश्चये। अपक्षाः पक्षिणश्च येते जाता ब्रह्मचारिणः ॥

औषधियों का ब्रह्मचर्य वर्णन है इससे उनमें फलफूल नहीं लगने से मतलब है। पशु तथा विन पंख वाले पक्षियों का भी ब्रह्मचर्य वर्णन है इन सब पदों का सिर्फ सृष्टि पैदा करने वाला भाव दिल में नहीं पैदा होवै जिस समय तक वही ब्रह्मचर्य का समय आता है। अब देखिये बारह वर्ष के बाद कन्या का रजोधर्म बहुत ग्रन्थों में कहा है भलेही देशानुसार किसी कन्या के देर में हो तो अंतःपुष्प शास्त्र कहता है, आगे इसका भी निर्णय पढ़ना। जब रजोधर्म कन्या के हुआ तो प्रकृती ही उसको सृष्टि करने की ओर झुकाती है और ब्रह्मचर्य समाप्त की सूचना देती है। महाभारत पढ़ो कुंती के

प्रथम ही रजोधर्म होने पर कर्ण भया है यह भी पिता का दोष है जो रजोधर्म के पहले कन्या नहीं ब्याह दी इसका पूरा हाल आगे पढ़ना । लीजिये, 'ब्रह्मचर्येण' पद से रजोधर्म वाली कन्या कदापि साबित नहीं होती, पढ़े लिखे होकर क्यों हठ करते हो ।

स्मृति और धर्मशास्त्र से कन्या-विवाह निर्णय ।

मनुः अ० २ श्लो० ३६—६७—

गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्य्याद्धि ब्राह्मणस्योपनायनम् । गर्भादेकादशे राज्ञो ३६॥ वैवाहिको विधिः स्त्रीणां संस्कारो वैदिकः स्मृतः । पतिसेवा गुरौवासो गृहार्थोऽग्नि परिक्रिया ॥ ६७

गर्भ से आठवें वर्ष में ब्राह्मण का उपनयन करै गर्भ से ग्यारहवें वर्ष में क्षत्री का यज्ञोपवीत करै, इत्यादि ॥ ३६ ॥

विवाह की विधि ही स्त्री का वैदिक संस्कार है, पति सेवा करना ही गुरुकुल का वास है और गृह कार्य करना अग्निहोत्र करना है ॥ ६७ ॥

देखिये यज्ञोपवीत की जगह में स्त्री का वैदिक संस्कार विवाह है पुरुष को दूसरा जनेऊ इसी से पहनाया जाता है इसलिये ८ वर्ष से बारह तक रजोधर्म के प्रथम कन्यादान कहा गया है यह मनुजी का कथन है । और भी सुनिये—

मनुः अ० ९ श्लो० ९४—

त्रिंशद्वर्षो वहेत्कन्यां हृद्यां द्वादशवार्षिकीम् ।
त्र्यष्टवर्षोऽष्ट वर्षां वा धर्मे सीदति सत्वरः ॥ ९४ ॥

तीस वर्ष वाला वर १२ वर्ष की शुद्ध कन्या विवाहै। धर्म में संकेत देख शीघ्र ही २४ वर्ष वाला वर ८ वर्ष वाली को ब्याह ले। यहां यह कहना कि आपत्काल में ऐसा करना चाहिये। आपद्धर्म का यह श्लोक है ऐसा कहना बिलकुल भूल है, इसमें १२ वर्ष कन्या का समय और वर का ३० वर्ष नियत समय है आपत् का समय २४ और ८ वर्ष वाला है अगर दोनों समय आपत् के कहोगे तो लीजिये रजोधर्म के पीछे ब्याह करने वाले पिता की निंदा मनुजी भी करते हैं "कालेऽदाता पिता वाच्यः" और रजोधर्म का समय १२ वर्ष का निश्चय हो चुका है अगर १२ वर्ष का समय आपत् वाला मनु जी कहते और १२ वर्ष के बाद रजोधर्म वाले समय को विवाह काल मानते हैं तो रजोधर्म वाले समय की निंदा क्यों करते इससे साफ ज़ाहिर होता है कि मनुजी की राय से विवाह का ठीक काल १२ वर्ष है आपत् में ८ वर्ष है और भी प्रमाण इसी को पुष्ट करने वाले हैं पढ़लो।

मनुः अ० ९ श्लो० ९०--"त्रीणिवर्षाण्युदीक्षेत्" देखिये यह भी मनुजी का कथन है कि रजोधर्म के प्रथम जो पिता विवाह करदे तो पिता निंदा करने के लायक नहीं है। ऊपर के श्लोक से निकलता है कि अगर रजोधर्म होने पर ब्याह करै तो निंदा के योग्य है।

अगर रजोधर्म के बाद भी तीन वर्ष तक पिता विवाह न करै तो कन्या अपना विवाह आप ही करले। लीजिये, इससे रजोधर्म के पीछे ब्याह तो सिद्ध न भया उलटे रजोधर्म के

पहले विवाह न करनेवाले पिता की मिट्टी पलीत की गई है। न मालूम आप क्या समझे हैं योग्य वर की प्रतीक्षा में पिता को पारिख की आज्ञा दी है पर प्रायश्चित्त वहां गले में मढ़ दिया है बिना प्रायश्चित्त विवाह न करै।

रजोधर्म के पीछे कन्या के विवाह की तो सभी धर्म शास्त्र निंदा करते हैं सुनिये—

रजोधर्म का समय–उसमें विवाह निषेध।

विधान पारिजाते—

रजोदर्शनमप्याय द्वादशाब्दे स्वजन्मतः।

स्त्री के रजोधर्म जन्म से बारहवें वर्ष होता है॥

वैद्यके—मासि २ रजः स्त्रीणां रसजं स्रवति ध्रुवम्।

वत्सरात् द्वादशादूर्ध्वं याति पंचाशतः क्षयम्॥

स्त्रियों के मास २ में रस से उत्पन्न रज होता है वह बारह वर्ष के पीछे से प्रारंभ और पचास वर्ष तक रहता है।

कश्यपः-प्राप्ते च द्वादशे वर्षे याता कन्या रजस्वला

वर्षद्वादशकादूर्ध्वं यदि पुष्पं वहिर्नहि।

अन्तः पुष्पं भवत्येव पनसौदुम्बरादिव॥

बारह वर्ष में कन्या रजस्वला होती है यदि बारह वर्ष के पश्चात् रजोधर्म न देख पड़े तो कटहर और गूलर बृक्ष की तरह जैसे ये दोनों बृक्ष फूलते नहीं है वैसे ही अंतर रजोधर्म हो जायगा भले ही देख नहीं पड़े।

च्यवनः—षडब्दमध्ये नोद्वाह्या–६ वर्ष तक कन्या का ब्याह नहीं करै।

कन्यादान का समय।

पराशर स्मृतिः-अ० ७ श्लो० ६—

अष्ट वर्षा भवेद्गौरी नव वर्षा च रोहिणी।
दश वर्षा भवेत्कन्या तत ऊर्ध्वं रजस्वला॥ ७॥

आठ वर्ष की कन्या गौरी नव वर्ष वाली रोहिणी है दश वर्ष की लड़की कन्या है इसके बाद रजस्वला होती है।

मात्स्ये—गौरी दद्याद्ब्रह्मलोकं सावित्रं रोहिणी ददत्।
कन्या ददत्स्वर्ग लोकमतः परमसद्गतिम्॥

आठ वर्ष की कन्या गौरी है उसका दान करने से ब्रह्म-लोक मिलता है ९ वर्ष की कन्या रोहिणी है उसका दान सूर्य लोक देता है दश वर्ष की लड़की कन्या है उसका दान स्वर्ग लोक देता है इसके पश्चात् रजोधर्म के पीछे कन्यादान से खराब गति होती है।

पराशर स्मृतिः—अ० ७ श्लो० ८। ९—

मासे तु द्वादशे वर्षे यः कन्यां न प्रयच्छति।
मासि मासि रजस्तस्याः पिबन्ति पितरः स्वयम्॥ ८॥
माता चैव पिता चैव ज्येष्ठ भ्राता तथैव च।
त्रयस्ते नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम्॥ ९॥

बारह वर्ष होने पर भी जो कन्यादान न करै तो उस कन्या के मास २ के रज को उसके पितर पीते हैं। कन्या के माता पिता बड़ा भाई कन्यादान के प्रथम रजोधर्म होने से तीनों नरक में जाते हैं। लीजिये, रजोधर्म के बाद विवाह कुड़क हो गया। मगर मीठा २ गप्प कड़ुआ २ थू। पराशर

स्मृति के इन श्लोकों को आप क्यों मानेंगे । अगर विधवा विवाह पास कराना होता तो यही स्मृति इष्टदेव हो जाती "कलौ पाराशर स्मृतिः" कलियुग में पराशर स्मृति ही मान्य है । ईश्वरचंद विद्यासागर ने विधवा विवाह सपोर्ट पुस्तक भर में खाली पराशर स्मृति ही लिख मारी है क्योंकि वे ब्रह्मसमाजी थे वेद तो मानते ही नहीं थे—अब वही पराशर स्मृति के प्रमाण हम देते हैं तो आप क्यों कोसों भागते हैं । अच्छा और सुनिये—

नारद स्मृतिः—यावन्तश्चर्तवस्तस्याः समतीयुः पतिं विना ।
तावत्यो भ्रूणहत्याः स्युस्तस्ययोनददातिताम् ॥

कन्यादान के बिना जितने ऋतु काल व्यतीत होते हैं उतनी ही भ्रूण (गर्भ) हत्या उसे लगती हैं जो कन्यादान नहीं करता है । लीजिये नारद स्मृति ने रजोधर्म के बाद का विवाह आपत्कारी बतलाया । और लीजिये—

याज्ञवल्क्य मिताक्षरा धर्मशास्त्र आचाराध्याये विवाह प्र०—

पिता पितामहो भ्राता सकुल्यो जननी तथा ।
कन्याप्रदः पूर्वनाशे प्रकृतिस्थः परः परः ॥ ६३ ॥
अप्रयच्छन्समाप्नोति भ्रूणहत्यामृतावृतौ ।
गम्यं त्वभावेदातृणां कन्याकुर्यात्स्वयं वरम् ॥ ६४

कन्या का पिता बाबा भाई कुलवाले माता क्रम से कन्यादान के अधिकारी हैं वे रजोधर्म के पहले कन्यादान नहीं करने से ऋतु २ में गोहत्या के भागी होते हैं । यदि कोई न हो तो कन्या अपना व्याह योग्य वर के साथ

आपही करले। लो, याज्ञवल्क्य ने तो रजोधर्म के बाद के विवाह का सफाया कर दिया।

प्रश्न–याज्ञ० अनन्यपूर्विकां कान्तामसपिण्डां यवीयसीम् ५२
यहां यवीयसी पद से जवान कन्या आती है।

उत्तर–सज्जनो, आपतो विद्वान् हैं यवीयसी पद का जवान अर्थ करना बड़ी ही भूल है। याज्ञ. ने इसी श्लोक के तिलक में यवीयसी पद का अर्थ 'वयसान्यूनां' कहा है इससे कम उम्र आई अगर नहीं तो आगे पढ़ा।

मनुः अ. ९ श्लो. ५७।५८।१०९।१२०, वाल्मीकि में भी है-

यवीयसस्तु या भार्या स्नुषा ज्येष्ठस्य सामता ॥ ५७
ज्येष्ठो यवीयसो भार्यां यवीयान्वाग्रजः स्त्रियम् ॥ ५९
पितेव पालयेत्पुत्रान् ज्येष्ठो भ्रातृन्यवीयसः ॥ १०९
यवीयान् ज्येष्ठभार्यायाम् ॥ १२० ॥

यहां सब श्लोकों में यवीयस पद का अर्थ छोटे का है स्त्रीलिंग में यवीयसी होता है। यहां पर आप के जवान अर्थ की घेर कर मात हुई।

विवाद का निचोड़।

भाइयो, आप धर्मशास्त्र में प्रमाण दीजिये जिसका अर्थ हो कि रजोधर्म के बाद विवाह करने में कुछ दोष नहीं बड़ा पुण्य है या हम से सुनिये कि रजोधर्म से पहले विवाह करने में बड़ा पुण्य है रजोधर्म के बाद में पाप है। प्रायश्चित्त से दोष की शांति भलेही हो जाय परंतु कन्यादान का पुण्य तो गायब हो जायगा।

संस्कारभास्करे आश्वलायन :—

दद्यात्त्दतुसंख्यागाः शक्तः कन्या पिता यदि ।
दातव्यैकाऽपि यत्नेन दाने तस्या यथा विधि ॥

रजोधर्म के पहले कन्यादान का माहात्म ऊपर कह चुके हैं बाद में प्रायश्चित्त है पढ़ो—कन्या का पिता समर्थ हो तो कन्या के ऋतु प्रमाण से गोदान करै, असमर्थ एक गोदान करै तो पाप से बचै पुण्य तो गई ।

नरक से बचत को यमस्मृति सुनिये—

तस्माद्व्यंजनोपेतामरजामपयोधराम् ।
अभुक्तां चैव सोमाद्यैः प्रतिपद्येत कन्यकाम् ॥

तिससे जिस कन्या के स्त्री वाले सामान नहीं हैं रजोधर्म स्तनादि प्रगट नहीं भये सोमादि देवतों का भोग पूरा नहीं हुआ ऐसी कन्या विवाहै । लीजिये, रजोधर्म के बाद के विवाह का मुंह काला हुआ ।

प्रश्न—शुश्रुत—शारीरिकस्थाने—

ऊन षोडश वर्षायामप्राप्तः पंचविंशतिम् ।
यद्याधत्ते पुमान् गर्भः कुक्षिस्थः स विपद्यते ॥
जातो वा न चिरंजीवेत् जीवेद्वा दुर्बलेन्द्रियः ।

सोलह वर्ष से कम उम्र वाली कन्या में २५ वर्ष से कम का पुरुष गर्भाधान करै तो नष्ट हो जाय जिये नहीं या दुर्बलेंद्रिय होकर जिये यहां कम उम्र का निषेध है ।

उत्तर—बाह २ गर्भाधान प्रथम संस्कार है तिसके पीछे कई संस्कार के बाद विवाह है आपने दोनों को मिला

दिया यह प्रमाण गर्भाधान का है न मानो तो शुश्रुत शारीरिक स्थान ही में विवाह प्र० 'अथास्मै पंचविंशति वर्षाय द्वादश वर्षां पत्नीमावहेत्'। इस २५ वर्ष वाले वर को १२ वर्ष वाली पत्नी विवाहै। गर्भाधान का तो प्रमाण वहीं और भी है आप छोड़ गये 'तस्माद-त्यन्त बालायां गर्भाधानं न कारयेत्'। तिससे अधिक बाला स्त्री में गर्भाधान न करै। बारह वर्ष का वि० प्रमाण तो शुश्रुत में भी है पुराना पाठ "ऊन द्वादशवर्षायां" ऐसा भी है। लो, झगड़ा खतम हुआ।

प्रश्न–भारत में कुंती सावित्री का ब्याह बड़ी उम्र में भया है इसका क्या उत्तर है।

उत्तर–महाभारत पढ़ो, कुंती ने एक ऋषि से देवता आवाहन का मंत्र जिससे गर्भ धारण करै पाया था। रजोधर्म के कुछ पहले उस मंत्रबल से सूर्य दर्शन करने से पुरुषाकार सूर्य को देखा। पीछे रजोधर्म हुआ। शुद्ध हो उसी मंत्र से सूर्य का आवाहन किया आये तब कहा जाइये मंत्र परीक्षा के लिये बुलाया था। सूर्य ने कहा हम दिव्यदेव कामवासना रहित हैं परंतु यह मंत्र विफल होने से उस मंत्रदाता ऋषि तथा तुम्हारे पिता तुम्हारा और हमारा सब का विनाश होगा अपने तेज से तुम्हारे कन्यापन की रक्षा करेंगे। अंत में मंत्र चरितार्थ कर चले गये। कर्ण पुत्र हुआ। लो, तेजस्वी सूर्य न होते तो दोनों की छीछालेदर होती।

रजोधर्म के पहले ब्याह न होने से यह नतीजा हुआ क्या यह चलन ठीक है, कोई मनैशा, स्वप्न में भी नहीं।

सावित्रीपति सत्यवान १४ वर्ष में मरा सवित्री की उम्र आप बतावें, ब्याह के पीछे पतिके जीवात्मा को यमराज ले चले तब सावित्री से बहुत बातचीत हुई। प्रसन्न हो धर्मराज बोले—ब्रह्मवैवर्तके प्रकृतिखंडे अध्याय २८—

कन्या द्वादशवर्षीया वत्से त्वं वयसाऽधुना।
ज्ञानं ते पूर्व विदुषां योगिनां ज्ञानिनां परम्॥

हे बच्ची तुम १२ वर्ष की हो परंतु तुम्हारा ज्ञान ज्ञानि-योगियों से बढ़कर है। लीजिये, पति वियोग में १२ वर्ष धर्मराज कहते हैं बड़ी उम्र का फैसला जनता करले।

प्रश्न—यह प्रमाण तो भारत का नहीं है।

उत्तर—मित्रो, हद होगई, कानपुर गंगा किनारे एक किताब में लिखा हो तो सच, अगर दूसरी किताब में लिखा हो तो झूठ मानोगे, लो भारत में ब्याह का प्रमाण पढ़ो।

अनुशा. पर्व अ० ४४ भीष्म युधिष्ठिर संवाद—

त्रिंशद्वर्षो दशवर्षां भार्यां विंदेत नग्निकाम्।
एकविंशति वर्षो वा सप्तवर्षामवाप्नुयात्॥

३० वर्ष वाला पुरुष १० वर्ष वाली रजोधर्म से रहित कन्या को ब्याहै २१ वर्ष वाला ७ वर्ष की भी ग्रहण करै। लो, साफ है कि अब भी कुछ सन्देह है।

प्रश्न—वाल्मीकि रामायण अयो० का० ११८ सर्गे——

पति संयोगसुलभं वयो दृष्ट्वा तु मे पिता ।

सीता ने अनुसूया से कहा कि पति संयोग सुलभ उम्र देख पिता ने ब्याह किया । लो, बड़ी उम्र आगई अब कहो ।

उत्तर—इस श्लोक का तिलक रामाभिरामी देखो 'पति संयोग सुलभं—पाणिग्रहणोचितम्' लो, कन्यादान समय कहा है गर्भाधान का नहीं अगर न मानो तो सीता का ही कथन पढ़ो । वाल्मीकि अरण्य का० ४७ सर्गे——

दुहिता जनकस्याहं ॥३॥ उषित्वा द्वादशसमा इक्ष्वाकूणां निवेशने ॥ ४ ॥ तत्र त्रयोदशे वर्षे राजा मंत्रयतः प्रभुः ॥ ५ 'तस्मिन्संभ्रियमाणेतु' 'नचयांचांचकारसा' 'ममभर्ता महातेजा वयसा पंचविंशकः' । अष्टादशहि वर्षाणि ममजन्मनि गण्यते ।

सीताजी ने रावण को यती समझ शाप के डर से सब हाल कहा—हम जनक की बेटी ब्याह से १२ वर्ष अयोध्या में रहीं १३ वें वर्ष राज छोड़ मेरे पति वन चले उस समय २५ वर्ष की पति की उम्र मेरी १८ वर्ष की उम्र थी । फैसला करो ब्याह में सीता की उम्र क्या थी । दशरथ ने विश्वामित्र से बालकांड में कहा है "ऊनषोडश वर्षोऽयं" सोलह वर्ष से राम की उम्र कम है । सोचो ।

प्रश्न—सत्यनारायण में प्रौढ़ा पद से बड़ी उम्र हो गई ।

उत्तर—भविष्य पुराणे प्रतिसर्ग पर्वणि अ० २८——

"कलानिधि कलेवासौ ववृधे सा कलावती ।
अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा च रोहिणी ॥ २१ ॥

दशवर्षा भवेत् कन्या ततः प्रौढ़ा रजस्वला।
प्रौढ़ा कालेन तां दृष्ट्वा विवाहार्थमचिंतयत् ॥ २२ ॥

यहां दश वर्ष के पीछे प्रौढ़ा संज्ञा बाद में रजस्वला होती है। अब कहां गई बड़ी उम्र—सब साफ २ लिख दिया जनता फैसला करै।

प्रश्न—प्रमाण तो कूड़ाघर में डालो समय को देखो कमज़ोर सृष्टि विधवा वृद्धि पर ध्यान दो इससे ज्यादा उम्र में व्याह करो।

उत्तर—भाई अगर कम उम्र के व्यांह से विधवा ज्यादा होती हैं तो बड़ी उम्र वाली व्याही क्यों विधवा होती हैं इससे विधवापन उम्र से नहीं बुरे कर्मों से होता है प्रमाण धर्मसंग्रहे—

मानुषः स्वां सतीं नारीं त्यक्त्वा भुंक्ते परस्त्रियम्।
जन्मान्तरे भवेन्नारी विधवा पतिवियोगिनी ॥
इह जन्मनि या नारी नित्यं जारेण संगता।
जन्मान्तरे भवेत्साऽपि विधवा दुःखभागिनी ॥

जो पुरुष अपनी सती स्त्री को छोड़ कर परस्त्री गमन करता है मर के वह स्त्री हो विधवा होकर पति वियोग का दुःख पाती है। जो नारी निज पति को छोड़ परपुरुष से भोग करती है वह मर कर स्त्री हो विवाह होते ही विधवा हो पति का दुःख सहती है। लो, देखा। पुनर्विवाह तो संनिपाती बीमार को हलुआ है जीने मरने का फैसला जनता करले।

कम उम्र ब्याह से संतान कमजोर के लिये आप सोचें हर वक्त सत्‌शिक्षा से दोनों मन सँभाल सकते हैं नहीं तो शिक्षा का प्रभाव स्कूल और विद्यालयों को आप खूब जानते हैं क्यों लाज उघारें ब्याह भले ही न करो परंतु दोनों की कार्यवाही तो रुकेगी नहीं इससे सत्‌शिक्षा धर्म ब्याह करो काम ठीक हो। अभिमन्यु १६ वर्ष में मरे तब २ महीने का गर्भ स्त्री के था रक्षा शिक्षा से प्रतापी परीक्षित राजा हुए जिन्होंने कलियुग को दंड दिया इतने ही से समझ लो ॥इति॥